गुरु नानक - सबद ७४

अछल छलाई नह छलै नह घाउ कटारा करि सकै ॥

रागु सिरीरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, २५

अछल छलाई नह छलै नह घाउ कटारा करि सकै ॥
जिउ साहिबु राखै तिउ रहै इसु लोभी का जीउ टल पलै ॥१॥
बिनु तेल दीवा किउ जलै ॥१॥ रहाउ ॥
पोथी पुराण कमाईऐ ॥ भउ वटी इतु तनि पाईऐ ॥
सचु बूझणु आणि जलाईऐ ॥२॥
इहु तेलु दीवा इउ जलै ॥
करि चानणु साहिब तउ मिलै ॥१॥ रहाउ ॥
इतु तनि लागै बाणीआ ॥
सुखु होवै सेव कमाणीआ ॥
सभ दुनीआ आवण जाणीआ ॥३॥
विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥
ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥
कहु नानक बाह लुडाईऐ ॥४॥३३॥

सार: स्पष्टता और आत्म-चिंतन एक स्थिर आंतरिक प्रकाश बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं। इनके बिना मन अशांत हो जाता है और भ्रम हावी हो जाते हैं। सच्ची जागरूकता हमें धोखे से बचाती है। जब मन स्पष्टता में स्थिर हो जाता है तब विचलन की शक्ति कमज़ोर पड़ जाती है। आत्मबल विरोध में नहीं बल्कि भ्रम और कठिनाई के समय में शांत और अडिग रहने की क्षमता में निहित होता है। जीवन हमें असंख्य अनदेखे तरीकों से सहारा देता है और बुद्धिमानी इसी में है कि हम इस सत्य को कृतज्ञता के साथ स्वीकार करें, संदेह के साथ नहीं। जैसे दीपक को जलने के लिए तेल की आवश्यकता होती है वैसे ही जागरूकता चिंतन और ईमानदारी के बिना पनप नहीं सकती। आत्म-चिंतन अंतर्दृष्टि को गहरा करता है जबकि ईमानदारी स्थिरता प्रदान करती है। यह दोनों मिलकर हमारे आंतरिक प्रकाश को प्रज्वलित रखते हैं। एक अशांत मन एक नाज़ुक

टिमटिमाते दीपक की लौ की तरह डगमगाता है जबकि एक केंद्रित मन एक शांत लेकिन शक्तिशाली प्रकाश से चमकता है।

अछल छलाई नह छलै नह घाउ कटारा करि सकै ॥
जो छल से परे हैं, उन्हें कोई छल भ्रमित नहीं कर सकता जिस प्रकार एक खंजर अविचल आत्मा को घायल नहीं कर सकता। यह दर्शाता है कि आध्यात्मिक स्पष्टता हमें भ्रम से अजेय बना देती है और स्थिर मन शांति में अडिग रहता है।

जिउ साहिबु राखै तिउ रहै इसु लोभी का जीउ टल पलै ॥१॥
जिस प्रकार से भी सार्वभौमिक ऊर्जा हमें पोषण देती है उसे कृतज्ञता से उसी रूप में स्वीकार कर लेना चाहिए परंतु लोभी व्यक्ति का मन सदा चंचल और अस्थिर ही रहता है। (१)

बिनु तेल दीवा किउ जलै ॥१॥ रहाउ ॥
तेल के बिना दीपक कैसे जल सकता है? यह रूपक दर्शाता है कि आत्म-चिंतन के आवश्यक गुण के बिना जागरूकता का प्रकाश क़ायम नहीं रह सकता। (१)(विराम)

पोथी पुराण कमाईऐ ॥
कोई व्यक्ति धर्मग्रंथों और पुराणों का अध्ययन कर सकता है परंतु सच्चा ज्ञान तभी अर्जित होता है जब वह उनके संदेश को अपने आचरण में उतारता है। यह बताता है कि ज्ञान को जीवन में जीना चाहिए न कि केवल कर्मकांड के रिवायती रूप में उसका पाठ करना चाहिए।

भउ वटी इतु तनि पाईऐ ॥
जैसे बाती दीपक को जलाए रखती है वैसे ही भीतर भय नहीं बल्कि सजगता के भाव को आत्मसात करें। यह इस सत्य की पुष्टी करता है कि आंतरिक सतर्कता जागरूकता को बनाए रखती है।

सचु बूझणु आणि जलाईऐ ॥२॥
सत्य को पहचानकर उसके सम्मान में दीपक जलाएँ। यह दर्शाता है कि वास्तविकता हमें स्पष्टता और अंतर्दृष्टि प्रदान करती है इसलिए वह श्रद्धा की पात्र है। (२)

इहु तेलु दीवा इउ जलै ॥
यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा तेल दीपक को जलाए रखता है। यह दर्शाता है कि विकास और पूर्णता के लिए, सार्थक इरादों से निरंतर पोषण की आवश्यकता होती है।

करि चानणु साहिब तउ मिलै ॥१॥ रहाउ ॥
आत्मज्ञान को अपनाकर, व्यक्ति परम एकत्व को अनुभव करता है। यह दर्शाता है कि जागरूकता सार्वभौमिक एकता का अनुभव कराती है। (१)(विराम)

इतु तनि लागै बाणीआ ॥
जब ज्ञान के शब्द हमारे भीतर गूंजते हैं।

सुखु होवै सेव कमाणीआ ॥
तब आत्म-चिंतन के अभ्यास से शांति का अनुभव किया जा सकता है।

सभ दुनीआ आवण जाणीआ ॥३॥
जो कुछ भी अस्तित्व में आता है उसका अंत निश्चित होता है। (३)

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥
सांसारिक मामलों के बीच रहते हुए स्वयं की और दूसरों की सेवा करने की क्षमता प्राप्त करें।

ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥
तभी अपने विवेक के साथ जुड़ने का स्थान प्राप्त किया जा सकता है। अर्थात आत्म-साक्षात्कार का वह प्रतिबिंब जो हमें अपने वास्तविक स्वरूप का सामना करने में सक्षम बनाता है।

कहु नानक बाह लुडाईऐ ॥४॥३३॥

नानक कहते हैं कि ख़ुशी से अपनी बाहें खोलो और झुलाओ। यह आत्मिक सादगी और निर्मलता की सच्ची मुक्ति के अनुभव के परम आनंद को दर्शाता है। (४)(३३)

तत्त्व: गुरु नानक बच्चों सी मासूमियत का ख़ूबसूरती से चित्रण करते हैं जो शर्तों और बंधनों से परे होती है बिल्कुल एक बेफ़िक्र बच्चे की तरह जो खुशी से अपनी बाहें झुला रहा हो। ईमानदारी के साथ सेवा करने और भीतर की ओर आत्म-चिंतन करने से हम अपनी सबसे प्रामाणिक स्थिति में होने का आनंद अनुभव कर सकते हैं जिसे कोई भी भ्रम कम नहीं कर सकता। वह हमें याद दिलाते हैं कि सांसारिक व्यस्तताओं के बीच, स्वयं की और दूसरों की सकारात्मक रूप से सेवा करने की शक्ति विकसित करना आवश्यक है। यह संतुलन हमारी अंतरात्मा को आत्म-साक्षात्कार की ओर बढ़ने के लिए जागृत करता है, हमें स्वयं का सामना करना और दुनिया को ईमानदारी और खुशी से गले लगाना सिखाता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com